टिप्पणियां contd.

रघुवंशम — भारतवर्ष की यह विलक्षणता रही है कि यहाँ व्यक्ति से अधिक उसकी रचनाओं को अधिक महत्त्व दिया गया। इसके फलस्वरूप किसी साहित्यिक के आविर्भाव-काल को जानना प्रत्यक्ष साधनों से जानना संभव नहीं है। कालिदास ने दो महाकाव्य लिखे थे — कुमारसंभव तथा रघुवंशम। इनके साथ 'मेघदूत' को मिलाकर 'लघुत्रयी' कहते हैं। यह संज्ञा तब पड़ी थी जब कविता की दिशा पाण्डित्य-मंडित महाकाव्यों की ओर बढ़कर स्थिर हो गयी थी। कालिदास के काव्य हृदय-पक्ष को द्रवित करने में समर्थ थे, विद्वानों के लिए इसलिए ये 'लघु' थे।

रघुवंश उन्नीस सर्गों में निबद्ध महाकाव्य है, जिसमें १५६९ (1569) श्लोक हैं। इसी वंश में राजा राम हुए। राजा दिलीप से लेकर राजा अग्निवर्ण (30) तीस राजाओं का इसमें वर्णन है। इस महाकाव्य में एक प्रख्यात राजवंश की प्रगति और पतन का चित्रण कर अपनी राजनीति-दर्शन का उल्लेख किया है। प्रजा-रञ्जन से राजा का उत्कर्ष होता है तथा प्रजा की उपेक्षा से विध्वंस की प्राप्ति होती है। राजा दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम तथा कुश — इन छः राजाओं के वर्णन में सत्रह (17) सर्ग लगाए, अठारहवें (18वें) सर्ग में अतिथि (कुश के पुत्र) आदि 22 (२२) राजाओं का मात्र वर्णन करके पूरा उन्नीसवां सर्ग राजा अग्निवर्ण के कामुक जीवन-चरित वर्णन में लगा दिया।

सूर्यवंशी राजाओं के वर्णन में कालिदास ने वाल्मीकीय रामायण में दी गयी वंशावली की अनुकृति न कर वायु-पुराण तथा विष्णुपुराण में वर्णित वंशावली का ग्रहण किया है। रघुवंश में प्रथम राजा दिलीप का वर्णन इसलिए किया गया है कि रघु की ऊपरी पीढ़ी की तपस्या और पुरुषार्थ दोनों का सम्यक् अंकन कर इस महान् राजा की पृष्ठभूमि दी जा सके।

रघुवंशी राजा आजीवन शुद्ध चरित्रवाले, फलप्राप्ति-पर्यन्त कर्म करनेवाले, समुद्र तक फैली पृथ्वी के पालक, स्वर्ग तक अपना रथ ले जानेवाले, विधिपूर्वक यज्ञ सम्पन्नकर्त्ता, याचकों को मुँह मांगा दान करनेवाले, सत्य की रक्षा के लिए मितभाषी, केवल यश के लिए विजय करनेवाले एवं केवल सन्तानोत्पत्ति के लिए विवाह करते थे। इस वंश में प्रथम राजा मनु थे।

Scanned with CamScanner

द्वितीय सर्ग राजा दिलीप के द्वारा नन्दिनी की सेवा और फल-प्राप्ति का वर्णन है। दिलीप की परीक्षा लेकर उन्हें पुत्र-प्राप्ति का आशीर्वाद दिया। तृतीय सर्ग में रघु का जन्म उनके सम्पूर्ण संस्कार तथा रघु का राज्याभिषेक वर्णित है। चतुर्थ सर्ग में रघु की दिग्विजय का मनोरम वर्णन है। सम्पूर्ण पृथ्वी को रघु ने आक्रान्त कर दिया। पञ्चम सर्ग में गुरु वरतन्तु का राजा रघु से चौदह करोड़ स्वर्णमुद्रा माँगने और पुनः आशीर्वाद में उनके कोष पूर्ण करने तथा अज के जन्म का वर्णन है। षष्ठ सर्ग उत्कृष्ट सर्ग है जिसमें 'इन्दुमती स्वयंवर' है जिसकी उपमा संस्कृत-साहित्य की उपलब्धि है — 'सञ्चारिणी दीपशिखेव (दीप) रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा। नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्ण-भावं स स भूमिपालः॥

सप्तम सर्ग में अज और इन्दुमती का विवाह। अष्टम सर्ग अत्यन्त कारुणिक है जिसमें इन्दुमती के असामयिक निधन पर अज का विलाप। नवम सर्ग में दशरथ का आखेट और मुनिकुमार श्रवण का वध वर्णित है। दशम सर्ग में दशरथ के पुत्रेष्टि-यज्ञ किए जाने का वर्णन है। चारों भाइयों का जन्म भी इसी का अंश है। एकादश सर्ग में सीता स्वयंवर एवं राम-विवाह का वर्णन है। द्वादश सर्ग में राम-वनवास, सीता-हरण और रावण-वध की कथा कवि ने शीघ्रता से कही है। त्रयोदश सर्ग राम को लंका (लंका) से अयोध्या लौटने की यात्रा है। चतुर्दश सर्ग राम-राज्याभिषेक तथा सीता परित्याग से संबद्ध है। पञ्चदश सर्ग में शत्रुघ्न द्वारा लवणासुर का वध, राम के दो पुत्र लव-कुश का जन्म और उनके द्वारा रामायण-गान आदि मुख्य विषय है। षोडश सर्ग में कुश के राजप्रमुख होने और अयोध्या की दुर्दशा का वर्णन है।

सप्तदश सर्ग कुमुद्वती से 'अतिथि' का जन्म एवं उसके राज्याभिषेक तक का वर्णन है। अष्टादश सर्ग में अतिथि के बाद अनेक पीढ़ियों के राजाओं — निषध, नल, नभ, पुण्डरीक, क्षेमधन्वा, देवानीक, पुष्य तथा सुदर्शन आदि राजाओं का संक्षिप्त वर्णन है। उन्नीसवें सर्ग में अन्तिम राजा अग्निवर्ण की कामुकता का वर्णन है।

कालिदास के महाकाव्यों के आधार पर उनकी काव्य-शास्त्रीय विशिष्टताओं का अवलोकन किया जा सकता है। भारतीय संस्कृति के प्रति गहन निष्ठा रखने वाले कवि ने आनन्द को जीवन का दर्शन मानकर इसके साधन के रूप में काव्य की रचना की है — "चित्तं व्याप्नोति यः क्षिप्रं शुष्केन्धनमिवानलः।" इस नियम से उनकी ललित पदावली हृदय को अकस्मात आवर्जित कर लेती है।

Uma Pathak, Deptt. of SKT

Scanned with CamScanner